वैराग्य की ज्ञान युक्त स्थिति

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

दुनिया में एक भर्तृहरि का वैराग्य शतक बहुत ज़्यादा प्रचलित है। जिसमें जो वैराग्य की व्याख्या उन्होंने की है उसमें कुछ बातें ऐसी लिखी हैं व्यक्ति पूरे जीवन जो अर्जित करता है। उस अर्जन में हरेक चीज़ को भय के साथ जोड़ दिया है। और उस भय के कारण वैराग्य को उत्पन्न करने का कारण बताया। उदाहरण के लिए कि भोग करने से रोग का भय, उच्च कुल में जन्म लेने से बदनामी का भय, धनाढय होने पर राजा का भय, बलशाली होने पर शत्रुओं का भय, रूप सौन्दर्य से वृद्धा अवस्था का भय, स्वस्थ शरीर को यमराज से भय, इसका मतलब ये दिखाया गया कि संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके रहने से भय नहीं लगता हो। अगर इस तरह का वैराग्य है तो व्यक्ति कुछ जुटाएगा ही नहीं। और अपने आपको इससे अलग महसूस करने की कोशिश करेगा। मतलब ये हुआ कि भर्तृहरि का जो वैराग्य शतक है वो जीवन से पलायन उत्पन्न करता है।

जीवन में संघर्ष है, संघर्ष के बिना जीवन नहीं, वैरागी हमेशा उदास रहता है अभी ये अगर बातें किसी को बतायी जायें, ये समझने का विषय है बहुत सुन्दर, अगर ये सारी बातें किसी को बतायी जायें तो लोगों के अन्दर उत्पन्न होगा कि सबकुछ करना व्यर्थ है। ये जो हम जीवन में एक-एक चीज़ कर रहे हैं ये एक-एक व्यर्थ है, क्योंकि भर्तृहरि ने बोला हुआ है। लेकिन जिसकी ज्ञान युक्त व्याख्या और उसकी समझ को थोड़ा-सा हम गहराई से अपने जीवन में उतारें तो शायद इसका मीनिंग कुछ बदल के आयेगा। क्योंकि भर्तृहरि का जो वैराग्य है ना वो जीवन की दुर्घटना से उपजा वैराग्य है। वो वैराग्य सिर्फ वैराग्य नहीं है वो घोर निराशा, हताशा, मोह के परिणाम स्वरूप अचानक ही उत्पन्न हो गया था उनके अन्दर। क्योंकि वैसे तो श्रृंगार शतक उन्होंने लिखा है कि जिसमें एक-एक चीज़ की बहुत सुन्दर व्याख्या की है कि जीवन ऐसा है, जीवन वैसा है। लेकिन एकाएक घटनायें उनके साथ ऐसी हुईं जो उनके अन्दर वैराग्य उत्पन्न हो गया। तो ये वास्तविक वैराग्य नहीं है। वास्तविक वैराग्य वो होता है जो व्यक्ति समझ से अपने अन्दर उत्पन्न करे। वैराग्य का गुण क्या है चित्त वृत्ति निरोध से बिल्कुल पनपता है। मन की ऊर्जा को संसार से बाहर देखने, सुनने और समझने का दृष्टिकोण पैदा करता है। इसका मतलब बाहर की दुनिया में क्या हो रहा है, अन्दर की दुनिया में क्या हो रहा है, बाहर की दुनिया में जो चीज़ें आपको मिली हुई हैं वो सबको पता है कि आज नहीं तो कल चली जायेंगी। वो कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। ये समझने और सोचने की बात है। ऐसे ही जो कुछ भी आपके सामने है वो जायेगा, चाहे वो शरीर है, चाहे शरीर के साथ सम्बन्ध हैं, चाहे और-और चीज़ें हैं जो आपके साथ जुड़ी हैं वो जायेंगी। तो उनके साथ लगाव न हो, उनके साथ हमारा पूरी तरह से जुड़ाव न हो, उसको सही करने का भाव, उसको ठीक करने का भाव जितना ज़्यादा से ज़्यादा हमारे अन्दर उत्पन्न होगा उतना हम अपने आपको उस श्रेणी में रख पायेंगे, उस अवस्था में देख पायेंगे। लेकिन अगर कम होगा तो हम कम से कम उस चीज़ को देख पायेंगे। इसीलिए समाज को ऐसे चीज़ों की आवश्यकता पड़ी कि हम सबको क्यों न उन सब बातों से जोड़ा जाये जिसमें ज्ञान हो, समझ हो, व्यक्ति कार्य भी करे सबके साथ रहे भी। और अपने आपको वैरागी भी, वैराग्य अभ्यास से आता है, वैराग्य त्याग से आता है। जैसे कोई भी चीज़ आपके सामने है लेकिन आपको उसकी समझ नहीं है तो आप उसके साथ जुड़ जायेंगे और लेकिन आपकी समझ थोड़ी-सी बढ़ जायेगी तो वही चीज़ हमारे सामने हैं उसको यूज़ करना है, फिर छोड़ देना है। तो परमात्मा ने आकर हमको ज्ञान युक्त वैराग्य सिखाया। कहा कि जितना आप ज़्यादा से ज़्यादा अभ्यास करेंगे, जितना ज़्यादा से ज़्यादा आत्मिक स्थिति का अभ्यास करेंगे, अपने आपको इस शरीर से, इस शरीर के सम्बन्धों से डिटैच करने की कोशिश करेंगे, डिटैचमेंट का मतलब है कि स्ट्रेंथ बढ़ाना बेसिकली। अपने अन्दर भाव पैदा करना कि जितना मैं अधिक से अधिक लोगों से अलग रहूँगा उतना अधिक से अधिक शक्तिशाली तरीके से इस जीवन को देख पाऊंगा। तो हमारा दृष्टिकोण इतना शक्तिशाली हो जायेगा, इतना पॉज़िटिव हो जायेगा कि आने वाली हरेक चीज़ को मैं बहुत अच्छे तरीके से फील कर पाऊंगा। तो ये जो चीज़ें है, ये जो घटनायें हैं, ये जो बातें हैं इन बातों को गहराई से समझ पाने का ही आधार वैराग्य है। इससे वैराग्य की जो दुनिया में व्याख्या की गई वो कहीं से भी सत्य नहीं है, बिल्कुल भी सत्य नहीं है। हाँ इतना ज़रूर है कि आपको समझ मिली कि जो दुनिया का वैराग्य दिखाया गया कि किसी भी घटना से उत्पन्न जो वैराग्य है वो क्षणिक है। क्योंकि जैसे घटना ठीक हो जायेगी फिर से वैराग्य आपका नैचुरल हो जायेगा। आप सोचेंगे कि जब जीवन में हैं तो जीवन में सारी चीज़ें चाहिए ही चाहिए। लेकिन नहीं, ज्ञान युक्त वैराग्य त्याग के आधार से, और एक बार कोई चीज़ समझ गये तो आप उसके साथ जीयेंगे भी, उसके साथ रहेंगे भी और उसको छोड़ेंगे भी नहीं। तो ये सारी चीज़ें सोचने की हैं, समझने की हैं और इनको लेकर आगे बढ़ने की है। तो इस तरह से हम वैराग्य को समझें और दुनिया के वैराग्य के आधार से अपने जीवन को ना तोलें।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : जब मैं देवी के भजन या गीत सुनती हूँ या नगाड़ों की थाप सुनती हूँ तो मेरा शरीर भारी होने लगता है और मैं झूमने लगती हूँ। ऐसा लगता है कि किसी और ने मेरे शरीर में प्रवेश कर लिया है। कहते हैं देवी आ गई है। हमारे गांव में कईयों को ऐसा होता है और कई बार गांव वाले कुछ पूछते भी हैं तो वो आत्मा बताती भी है। मेरे पति को और मुझे ये बिल्कुल भी पसंद नहीं है। इन गीतों नगाड़ों का मुझ पर कोई असर न हो उसके लिए क्या कोई उपाय हो सकता है?

उत्तर : बिल्कुल ये कुछ लोगों के साथ होता है। कोई शक नहीं कि ये आत्मायें ऐसे प्रवेश तो करती हैं। इसे केवल कल्पना तो नहीं माना जा सकता। पहले हम लोग भी इस पर इतना विश्वास नहीं करते थे। लेकिन जब ये बातें प्रैक्टिकल में आईं तो देखा आत्मायें आती हैं। भटकती हुई आत्माओं में कुछ अच्छी भी होती हैं, सिर्फ बुरी ही नहीं होती। ऐसी आत्मायें भी होती हैं जो दूसरों को मदद करती हैं। लेकिन इससे दिमाग कमज़ोर होता है। जिसमें प्रवेश करेगी उसका दिमाग कमज़ोर होगा। उसकी हेल्थ पर भी बुरा असर आ सकता है। कभी ऐसा भी हो सकता है कि आपका दिमाग इतना कमज़ोर हो जाये कि कोई भटकती दूर से आत्मा आपमें प्रवेश कर जाये। तो इससे बचना बहुत ज़रूरी है। जब आपको ऐसी फीलिंग हो, ऐसा होने लगे तो तुरंत ये अभ्यास शुरू कर दें कि मैं सर्वशक्तिवान की संतान, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। लगातार इसको याद करें। मेरा ये तन, मेरा ये रथ ये तो मैं भगवान को समर्पित कर चुकी हूँ। ये और किसी के काम नहीं आ सकता। ये उसी के लिए है और ये उसी के काम आयेगा। और उसकी मुझे आज्ञा नहीं है इन सबके लिए। एक मन में रिजेक्शन हो जायेगा उसके लिए। और मास्टर सर्वशक्तिवान के अभ्यास से चारों ओर पॉवरफुल प्रभामंडल क्रियेट हो जायेगा। उसकी किरणें चारों ओर फैलने लगेंगी और कोई भी आत्मा आपमें प्रवेश करने में असमर्थ पायेगी। क्योंकि औरा इतना पॉवरफुल हो जाता है चारों ओर जैसे हम बहुत पॉवरफुल घेरे में बंध जाते हैं। कोई भी ऐसी आत्मा उस घेरे को काट नहीं सकती। तो ये हमेशा कम से कम 21 बार तुरंत बहुत शांति से बैठकर अभ्यास कर लें। मैं तो परमात्मा की संतान, सर्वशक्तिवान की संतान, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ बस ये, आपका समाधान हो जायेगा।

प्रश्न : मेरा नाम धनंजय जायसवाल है। गांव से कई बार ऐसे समाचार मिलते हैं कि फलानी महिला जादू-टोना करती है। वो कईयों को खा गई। इसलिए पंचायत और लोग उसे सरेआम दंडित करते हैं अमानवीय तरीके से। 21वीं सदी में ये सब बड़ा अजीब लगता है। अंधश्रद्धा, अविश्वास लगता है। इस विषय पर आप प्रकाश डालें।

उत्तर : आजकल ये सब बहुत बढ़ गया है। खासकर ग्रामीण इलाकों में। वहाँ एजुकेशन की बहुत ज़्यादा कमी है। शहरों में भी कई बार आत्मा कईयों के ऊपर ऐसा वार कर देती है और ये केसेज रोज़ सामने आते हैं कि किसी अपने ही ने कोई तंत्र-मंत्र, जादू-टोना करा दिया हो। उसका असर हो गया है। बिजनेस ठप हो गया है। बीमारियां बढ़ गई हैं। इलाज हो नहीं रहा या बच्चा पढ़ नहीं पा रहा है। ये सब भी आजकल दिखाई दे रहा है। मैंने बताया ना कि पहले तो हम इन सब बातों पर विश्वास नहीं करते थे और हमारा ज्ञान तो इन सब बातों से बहुत आगे का है, बहुत ऊपर का है। ये बातें उसकी भेंट में बहुत छोटी, बहुत निम्न स्तर की हो जाती हैं। ये देवियों की विशेष रूप से तमोप्रधान भक्ति जिसमें भूत-प्रेतों की भक्ति ये बहुत चालू हो गई है। ये भक्ति का अंतिम चरण है। लेकिन अगर हम राजयोग का अभ्यास करते हैं, अगर हम अपनी विल पॉवर को बहुत बढ़ा लेते हैं तो हम पर इन सबका कोई असर नहीं होगा। इसलिए मैं तो यही कहूँगा कि गाँव में ऐसा होता रहता है, पंचायत भी उनको दंड देती है। कभी-कभी तो निर्दोष नारी भी इसमें मारी जाती है। बदला लेने की भावना से उसे बदनाम ही करते रहते हैं। इन चीज़ों से जितना हो सके बचना चाहिए। और राजयोग के द्वारा अपनी शक्तियों को बहुत बढ़ाना चाहिए। मैं सभी को यही कहना चाहूँगा कि जो काम दूसरों के लिए कर रहे हैं वही काम कोई हमारे लिए भी करेगा। जैसा व्यवहार हम दूसरों से कर रहे हैं वैसा व्यवहार हमें भी सहना पड़ेगा। इसलिए इसे बहुत बड़ा पाप मानकर इन सब धंधों में नहीं जाना चाहिए। वैसे ही संसार में बहुत पाप बढ़ा हुआ है और पाप बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। अब समय है पुण्य करने का, अब समय है दूसरों को मदद करने का।

प्रश्न : कई बार कोई छींक देता है तो लोग इसको अपशगुन मानते हैं और कोई कहीं जा रहा हो तो पीछे से कोई आवाज़ दे दे तो उसे भी अशुभ कहते हैं। क्या इन सब बातों के पीछे भी कोई वैज्ञानिक आधार है या यूं ही मनगढ़ंत बातें हैं?

उत्तर : देखिए किसी ने छींक दिया और कोई चला गया उसका काम सफल नहीं हुआ तो कहेंगे कि तुमने छींका था या तुमने पीछे से आवाज़ दी थी। ये सिर्फ एक मान्यता है। वास्तव में तो ये कॉमन चीज़ें हैं। छींक भी एक शारीरिक प्रक्रिया है। इन चीज़ों के अंधविश्वास में मनुष्य को मन इतना भटकाना नहीं चाहिए, अच्छे विचार करें। और जब घर से निकल रहें हों तो विशेष करके ये अभ्यास कर लें मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं विघ्न विनाशक हूँ। सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। मुझे तो सफलता मिलेगी ही, मेरे साथ तो स्वयं भगवान है। तो सुन्दर विचारों के साथ घर से निकलेंगे। अर्थात् सुन्दर वायब्रेशन के साथ घर से निकलेंगे तो ये वायब्रेशन हमारे हर कार्य को इफेक्ट करेंगे। कहीं भी हमारा अकल्याण नहीं होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल